①
3/7/20

B.A. / B.Sc.
भाग I
हिंदी रचना

सूरदास

डॉ० ज्योत्सना कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
एस०एस० कॉलेज,
जहानाबाद

सूरदास का काव्य परिचय - क्रमशः :-

सूर का वात्सल्य वर्णन एकांगी नहीं है, उसमें बाल कृष्ण की चेष्टाओं और प्रवृत्तियों का वर्णन है तो मातृ हृदय की लालसा भी है। संयोग पक्ष भी है और मातृ-पितृ पक्ष भी है। इसमें संयोग और वियोग दोनों पक्षों का वर्णन किया गया है।

वात्सल्य की तरह श्रृंगार क्षेत्र के भी सूर एकछत्र सम्राट हैं। कृष्ण की किशोरावस्था से लेकर युवावस्था तक ब्रज की गोपियों के साथ उनकी क्रीड़ाओं को उन्होंने जितना स्वाभाविक और प्रभावकारी वर्णन किया है वह अन्यत्र दुर्लभ है।

सूर के काव्य में भ्रमरगीत का अत्यधिक महत्व है। उपालम्भ काव्य में वियोग श्रृंगार का चित्रण सूर की संवेदना की भावात्मक गहराई का परिचायक है। भ्रमरगीत की गोपियों के मनुहार में उद्धव के प्रति उलाहनों का, उद्धव की बातों के खंडन की उनकी प्रवृत्ति की अधिक उनकी वियोग दशा का चित्रण मिलता है।

सूर की गोपियों की दलील विरल विदग्धता की ख्याति देता है। उनकी

8/7/20 ②

हिन्दी विभाग,
सूरदास का काव्य
परिचय — [illegible]
B.A. Part I

वेदना को हम देश और काल की सीमा में बाँधा नहीं सकते हैं। यह सार्वकालिक और सार्वदेशिक हो गया।—

निसि दिन बरसत नैन हमारे।
सदा रहति पावस ऋतु हम पै,
जब ते स्याम सिधारे।

श्रृंगार के क्षेत्र में संयोग और वियोग दोनों पक्षों का वर्णन सूर ने कुशलता से किया है। वियोग की सभी दशाओं का वर्णन भी सूर ने किया है। शास्त्रीय मापदंड पर भी सूर का वियोग वर्णन सही है।

सूरदास भक्त कवि थे। इनके पदों में भक्ति का अगाध सागर लहरा रहा है। इनकी भावना में वल्लभाचार्य की सिद्धांत धारा और पुष्टि-मार्गी भावना की झलक मिलती है। कृष्ण भक्ति भावना के आंगन में सगुण भक्ति भावना के वे पोषक हैं। बालकृष्ण इनके आराध्य देव हैं। इनकी भक्ति भावना में समर्पण और आत्म-निवेदन का एकनिष्ठ भाव है। इनके विनय के पद वस्तुतः हृदय को छू लेते हैं। सूर की दृष्टि में संसार सागर से पार उतरने में भक्ति ही एकमात्र उपाय है।

सूर के पदों में विभिन्न दार्शनिक मत मतान्तरों का वर्णन तो नहीं है, पर वे वल्लभाचार्य के शुद्धाद्वैत दर्शन से

(3) 8/7/20

B.A. Part I

सूरदास का कवि परिचय

हिन्दी रचना

क्रमशः

प्रभावित हुए। ये काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि को भक्ति के क्षेत्र में बाधक मानते हैं। इन्होंने निर्गुण का खंडन और सगुण का मंडन किया है।

सूर के पदों को गीतों की संज्ञा दी जाती है। नारदेव और विद्यापति के बाद सूर की लिखा में गीतों ने अपने रहने का स्थान सुनिश्चित किया। सूर ने इसे अपनाकर उसे धन्य कर दिया।

सूर की भाषा ब्रज भाषा है। सूर की भाषा की सरसता, स्वाभाविकता, प्रांजलता, प्रवाहमयता, प्रगाढ़ता इत्यादि की समता कोई कर नहीं सकता है।

कुछ कल थे पर आज नहीं, कुछ आज हैं पर कल नहीं रहेंगे। पर कुछ ऐसे भी हैं जो कल भी थे, आज भी हैं और आने वाले कल में भी रहेंगे। सूरदास ऐसे ही महाकवि थे। ये कल भी थे, आज भी हैं, और आने वाले कल में भी अपने गुणों के कारण जन-जन के कंठहार बने रहेंगे।

प्रश्न पत्र

(4)

8/7/20

B.A. + B.Sc. Part I

हिन्दी रचना

सभी प्रश्नों के अंक बराबर हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न 1×10=10

(1) सूरदास का जन्म संवत् क्या है?
(2) सूरसागर किसकी रचना है?
(3) सूरदास किस देवता के उपासक हैं?
(4) सूरदास किसके शिष्य थे?
(5) सूर ने किसके बाललीला का वर्णन किया है?
(6) इनकी भाषा ब्रजभाषा है या नहीं?
(7) सूरसारावली किसकी रचना है?
(8) सूर सगुण के उपासक थे या निर्गुण के?
(9) सूर किस काल के कवि थे?
(10) सूर के कृष्ण हठी हैं या नहीं?